ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

Volume 11, Issue 2, March 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

IMPACT FACTOR: 7.583

| www.ijarasem.com | ijarasem@gmail.com | +91-9940572462 |

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 2, March-April 2024 |

आधुनिकता और परंपरा : भारतीय समाज में टकराव और सामंजस्य

ओम प्रकाश कालवा[1] प्रो. प्रताप पिंजानी (से.नि.)[2]

सहायक आचार्य, समाजशास्त्र, मास्टर भँवरलाल मेघवाल, राजकीय कन्या महाविद्यालय, सुजानगढ़ (चूरु)[1]

समाजशास्त्र विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, केकड़ी (अजमेर)[2]

सारांश

भारतीय समाज में आधुनिकता और परंपरा का संघर्ष एक जटिल और व्यापक विषय है। यह संघर्ष देश की सांस्कृतिक, सामाजिक, और आर्थिक परिदृश्य में गहरे पैठा हुआ है। भारतीय समाज में परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाने की कोशिशें समय–समय पर होती रही हैं, जिससे यह समाज एक गतिशील और बहुआयामी स्वरूप धारण करता है। भारतीय समाज की परंपराएं हजारों साल पुरानी हैं और यह समाज की नींव का हिस्सा हैं। इन परंपराओं में धार्मिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक मूल्य समाहित हैं जो समाज के ढांचे को बनाए रखते हैं। विवाह, त्योहार, रीति–रिवाज, और पारिवारिक संरचनाएं परंपरा का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यह परंपराएं समाज में स्थिरता और पहचान प्रदान करती हैं। वहीं दूसरी ओर, आधुनिकता ने भारतीय समाज में महत्वपूर्ण बदलाव लाए हैं। शिक्षा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और आर्थिक विकास ने लोगों की सोच और जीवनशैली को प्रभावित किया है। आधुनिकता ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता, लैंगिक समानता, और मानवाधिकारों को महत्व दिया है। शहरीकरण और औद्योगीकरण ने लोगों की जीवनशैली और समाज की संरचना को बदल दिया है। पारंपरिक भारतीय परिवार संयुक्त परिवार प्रणाली पर आधारित है, जहाँ सभी सदस्य एक साथ रहते हैं और एक–दूसरे की जिम्मेदारियों को साझा करते हैं। आधुनिकता ने न्यूक्लियर परिवारों की अवधारणा को बढ़ावा दिया है, जहाँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता को महत्व दिया जाता है। परंपरागत भारतीय समाज में धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्य महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। आधुनिकता ने तर्कसंगतता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्व दिया है। यह परिवर्तन कई बार सामाजिक और नैतिक मुद्दों पर संघर्ष का कारण बनते हैं। यह आलेख भारतीय समाज में आधुनिकता और परंपरा के बीच टकराव और सामंजस्य के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करेगा।

मूल शब्द : भारतीय समाज, आधुनिकता और परंपरा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, लैंगिक समानता

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 2, March-April 2024 |

परिचय

भारत, एक समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर वाला देश है जहां परंपरा और आधुनिकता का अनूठा संगम देखा जा सकता है। यह देश एक ओर जहां अपनी प्राचीन संस्कृति और परंपराओं को संजोए हुए है, वहीं दूसरी ओर तेजी से बदलते वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति के साथ भी कदमताल कर रहा है। भारतीय समाज में आधुनिकता और परंपरा एक–दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि परस्पर पूरक हैं. आधुनिकता एक आर्थिक बल है, जबकि परंपरा सांस्कृतिक और सामाजिक है. परंपरा में दृष्टिकोण, भाषा, संगीत, कला, विद्वत्ता आदि की एक श्रृंखला शामिल है जो सदियों से विकसित हो रही है. आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके जरिए समाज में आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान का परिचय दिया जाता है. इसका मकसद समाज के लोगों को बेहतर और ज़्यादा संतोषजनक जीवन देना है. आधुनिकीकरण ने सामाजिक संस्थाओं जैसे विवाह, परिवार, जाति आदि में बदलाव किए हैं. हालांकि, आज भी ज़्यादातर लोग परंपरागत आदर्शों का पालन करते हैं। परंपरागत रूप से, भारतीय समाज में पुरुष और महिलाओं की भूमिकाएँ स्पष्ट रूप से विभाजित रही हैं। आधुनिकता ने लैंगिक समानता और महिलाओं के अधिकारों की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की है। महिलाएं अब शिक्षा, करियर, और सामाजिक जीवन में बराबरी का हिस्सा बन रही हैं। परंपरागत समाज में पेशा अक्सर जाति और परिवार के व्यवसाय पर निर्भर करता था। आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने लोगों को उनके रुचि और योग्यता के अनुसार पेशे चुनने की स्वतंत्रता दी है। इससे समाज में पेशेवर विविधता और आर्थिक गतिशीलता बढ़ी है।

परंपरा का महत्व :

भारतीय समाज में परंपराएं जीवन के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक रीति–रिवाजों का पालन आज भी व्यापक रूप से किया जाता है। परिवार और समाज की संरचना, विवाह, त्योहार और अनुष्ठान सभी परंपरागत मान्यताओं पर आधारित हैं। भारतीय समाज में परंपरा को पहचान, स्थिरता और सामाजिक बंधन के रूप में देखा जाता है।

आधुनिकता की चुनौती :

वैश्वीकरण, तकनीकी विकास, और शिक्षा के प्रसार ने भारतीय समाज में आधुनिकता के नए आयाम जोड़े हैं। आज युवा पीढ़ी इंटरनेट, सोशल मीडिया, और आधुनिक तकनीकों के माध्यम से वैश्विक संस्कृति से जुड़ी हुई है। यह परिवर्तन परंपरागत मूल्यों और मान्यताओं को चुनौती दे रहा है। उदाहरणस्वरूप, विवाह के मामले में, जहां पहले परिवार की पसंद और अरेंज्ड मैरिज प्रचलित थी, वहीं आज प्रेम विवाह और स्वतंत्रता को अधिक महत्व दिया जा रहा है।

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)
| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|
| Volume 11, Issue 2, March-April 2024 |

टकराव के मुख्य क्षेत्र :

- **परिवार संरचना** – संयुक्त परिवार की परंपरा अब एकल परिवार में बदल रही है। यह परिवर्तन बुजुर्गों की देखभाल और पारिवारिक बंधनों पर प्रभाव डाल रहा है।
- **विवाह और संबंध** – आधुनिकता के प्रभाव से विवाह और संबंधों के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव आया है। जहां पहले विवाह सामाजिक और पारिवारिक कर्तव्य माना जाता था, वहीं आज यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पसंद पर आधारित हो गया है।
- **लिंग समानता** – परंपरागत समाज में महिलाओं की भूमिका सीमित थी, जबकि आधुनिक समाज में महिलाएं शिक्षा, रोजगार और निर्णय लेने के मामलों में सक्रिय हो रही हैं। यह बदलाव लिंग असमानता के खिलाफ एक महत्वपूर्ण कदम है, लेकिन इससे पारंपरिक भूमिकाओं में संघर्ष उत्पन्न हो रहा है।
- **धार्मिक विश्वास और आस्थाएं** – परंपरागत धार्मिक आस्थाओं और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बीच टकराव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, युवाओं में धर्म के प्रति कम आस्था और वैज्ञानिक तर्कों के प्रति झुकाव देखा जा रहा है।

सामंजस्य की संभावनाएं :

भारतीय समाज में टकराव के बावजूद, परंपरा और आधुनिकता के बीच सामंजस्य की संभावनाएं भी प्रबल हैं। यह सामंजस्य कुछ इस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है–

- **शिक्षा और जागरूकता** – शिक्षा के माध्यम से परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित किया जा सकता है। युवाओं को परंपराओं का सम्मान करना और आधुनिकता को समझना सिखाना आवश्यक है।
- **संवाद और सहिष्णुता** – परंपरागत और आधुनिक विचारधाराओं के बीच संवाद स्थापित कर सहिष्णुता बढ़ाई जा सकती है। परिवार और समाज के स्तर पर खुले संवाद से टकराव को कम किया जा सकता है।
- **संस्कृति का नवाचार** – परंपराओं को समयानुसार परिवर्तित और अद्यतन करना आवश्यक है। इससे परंपराएं प्रासंगिक बनी रहेंगी और आधुनिकता के साथ सामंजस्य स्थापित होगा।
- **नवीन तकनीकी का समावेश** – तकनीकी विकास और परंपराओं को साथ लेकर चलने की आवश्यकता है। उदाहरणस्वरूप, धार्मिक अनुष्ठानों को डिजिटल माध्यम से प्रसारित करना और पारंपरिक कलाओं को आधुनिक मंच प्रदान करना।

नवीन तथ्य :

हाल के वर्षों में भारतीय समाज में कई नए बदलाव देखने को मिले हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार, शहरी क्षेत्रों में संयुक्त परिवार की संख्या में 20: की कमी आई है, जबकि एकल परिवारों की संख्या में 35 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इसके अलावा, एक सर्वेक्षण में पाया गया कि 60 प्रतिशत युवा अपने जीवनसाथी का चयन स्वयं करना चाहते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में, महिलाओं की भागीदारी 75 प्रतिशत तक बढ़ी है, जो लिंग समानता की दिशा में एक सकारात्मक संकेत है।

निष्कर्ष

भारतीय समाज में परंपरा और आधुनिकता के बीच टकराव स्वाभाविक है, लेकिन यह टकराव विकास और परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी है। परंपरा और आधुनिकता के बीच सामंजस्य स्थापित कर समाज को प्रगति की ओर अग्रसर किया जा सकता है। इसके लिए शिक्षा, संवाद, सहिष्णुता, और नवाचार महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। भारतीय समाज की विविधता और समृद्धि को ध्यान में रखते हुए, परंपरा और आधुनिकता का संगम ही एक सशक्त और संतुलित समाज का निर्माण करेगा।

References:

1. "Changing Family Structures in India." *Economic and Political Weekly*, vol. 53, no. 26, 2018, pp. 15-17.
2. "Digital India: Bridging Tradition and Technology." *Journal of Information Technology*, vol. 55, no. 4, 2022, pp. 200-215.
3. "Globalization and Its Impact on Indian Society." *Journal of Social Sciences*, vol. 34, no. 2, 2020, pp. 120-132.
4. "Women's Education in India: Progress and Challenges." *International Journal of Education Development*, vol. 45, 2019, pp. 60-70.
5. "Youth and Modernity: A Study on Changing Perspectives." *Indian Journal of Sociology*, vol. 39, no. 3, 2021, pp. 95-108.
6. Ahluwalia, Montek Singh. "India's Economic Reforms." *Oxford University Press*, 2004.
7. Chatterjee, Partha. *The Nation and Its Fragments: Colonial and Postcolonial Histories*. Princeton University Press, 1993.
8. Desai, Meghnad. *The Rediscovery of India*. Penguin Books, 2011.
9. Nanda, Meera. *Prophets Facing Backward: Postmodern Critiques of Science and Hindu Nationalism in India*. Rutgers University Press, 2003.
10. Singh, Khushwant. *The History of Sikhs*. Oxford University Press, 2004.

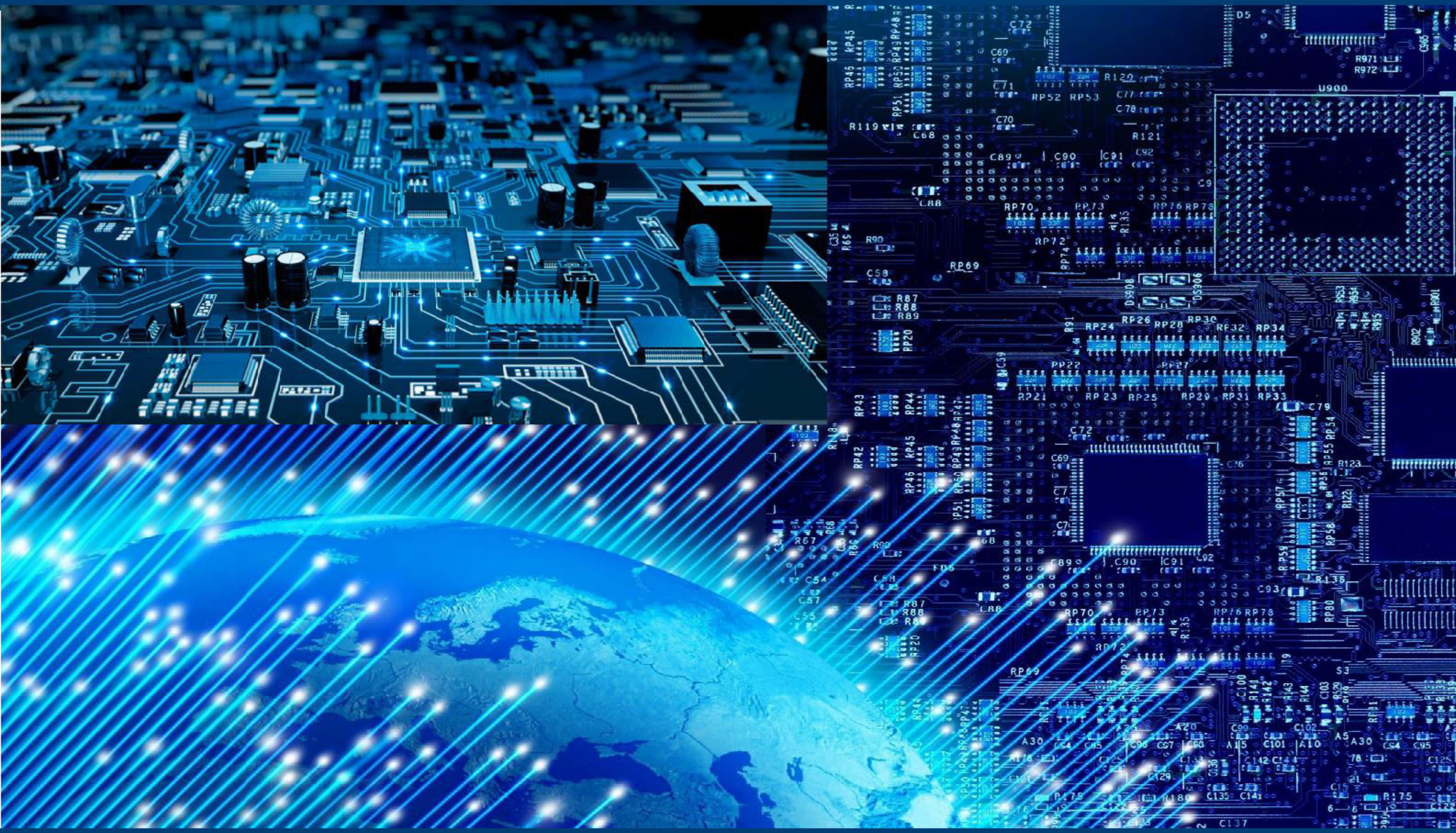

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com